उत्तराखण्ड की प्राकृतिक सम्पदा, पर्यटन एवं विकास

***डॉ0 (श्रीमती) आभा शर्मा**
****तनूजा सामन्त**

देवभूमि के गौरव से गौरवान्वित उत्तराखण्ड राज्य का इतिहास अत्यन्त विशाल एवं समृद्ध रहा है। यह राज्य प्राचीन काल से ही मानव सभ्यता का निवास स्थल रहा है। यहाँ की पुण्य भूमि को आर्य–आर्येत्तर प्रजातियों, आदिवासियों, गन्धर्वो, किन्नरों एवं अन्य कबीलों के साथ–साथ वाह्य जातियों के निवास तथा संरक्षण के द्वारा अपनी सांस्कृतिक छटा का विकीर्ण करने का अवसर प्राप्त हुआ है। इस राज्य की प्राकृतिक सौन्दर्यता एवं समृद्धि मानव जीवन हेतु वरदान स्वरूप है। प्रकृति के मध्य मधुर सम्बन्धों का निर्वाह करने वाला उत्तराखण्ड राज्य प्राचीन काल से वैदिक देवी–देवताओं को मान्यता देते हुए विकास पथ पर अग्रसर हुआ हैं। प्रकृति के सभी उपादानों को देवस्वरूप मानकर उनकी पूजा करना तथा संरक्षण करना इस राज्य की विशिष्टता रही है।

प्राकृतिक सम्पदा एवं विकास का परस्पर घनिष्ठ सम्बंध है। सर्वविदित है कि यदि प्राकृतिक सम्पदा समृद्ध हुई तो विकास की सम्भावनायें भी प्रायःअधिक होती है, क्योकि विकास का आधार संसाधन है तथा ये संसाधन प्रकृति प्रदत्त होते है। प्रकृति में निहित तत्व जल, वायु, भूमि मिट्टी, पेड़ पौधे, जीव–जन्तु इत्यादि मानव जीवन के अस्तित्व के आधार ही नहीं वरन् हमारी आर्थिक समृद्धि के द्योतक भी होते हैं। देवभूमि के नाम से प्रसिद्ध उत्तराखण्ड राज्य के विकास में भी यहाँ की प्राकृतिक सम्पदा का महत्वपूर्ण योगदान है। यह राज्य भौगोलिक परिस्थितियों, प्राकृतिक सम्पन्न्ता एवं सौन्दर्य का अलौकिक भण्डार है। यहाँ की उपयुक्त जलवायु, शुद्ध वायु, शान्तिपूर्ण वातावरण, सौन्दर्ययुक्त घाटियाँ, प्राकृतिक वनस्पतियाँ, जलयुक्त नदियाँ, बर्फयुक्त चोटियाँ विभिन्न धार्मिक स्थल, जैव–विविधता इत्यादि जहाँ एक ओर प्राकृतिक सौन्दर्यता के संवर्द्धक हैं, वहीं दूसरी ओर पर्यटन को प्रोत्साहित करके राज्य के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

जिस प्रकार प्राकृतिक सम्पदा एवं विकास का घनिष्ठ सम्बन्ध है, उसी प्रकार पर्यटन एवं विकास भी परस्पर अन्योन्याश्रित है। पर्यटन से अभिप्राय एक ऐसी यात्रा से जो मनोरंजन या फुरसत के क्षणों का आनन्द प्राप्त करने के उद्देष्य से की जाती है। यह यात्रा मनोरंजन के साथ–साथ व्यापार, सेवा, मानव की आत्मिक शान्ति, सन्तुष्टि एवं ज्ञान प्राप्ति के लिए भी आवश्यक है। पर्यटन का मानव एवं राष्ट्र दोनों के विकास में महत्वपूर्ण स्थान होता है। इस यात्रा से मानव एक ओर दैनिक जीवन की यातनाओं एवं कष्टों को विस्मृत करके क्षणिक आनन्द एवं शान्ति प्राप्त करता है। उसकी जीवन शैली में परिवर्तन आता है। वह नवीन भौगोलिक सामाजिक एवं सांस्कृतिक ज्ञान अर्जित करता है वही दूसरी ओर पर्यटन से सम्बन्धित राज्य अथवा विकास में महत्वपूर्ण योगदान देती है। पर्यटन के महत्व को वर्तमान में ही नही अपितु प्राचीन काल से स्वीकार किया गया है, इस सम्बन्ध में प्राचीन गुरूओं ने कहा है कि **–"पर्यटन के बिना मानव अन्धकार प्रेमी होकर रह जायेगा,"।** विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले पर्यटन की उत्तराखण्ड राज्य में भी अपार सम्भावनायें है। यह राज्य एक पर्वतीय राज्य है। यहाँ की प्राकृतिक सौन्दर्यता मानव को अपनी ओर आकर्षित करती है। इस राज्य में वनों का क्षेत्रफल, वर्षभर जलयुक्त नदियाँ, ऊँची–ऊँची व वर्फीली चोटियाँ विभिन्न वनस्पतियों, खनिज–पदार्थ, औषधियाँ तथा सर्वत्र हरियाली विद्यमान है। प्रचुर प्राकृतिक संसाधनों एवं सौन्दर्यता के द्वारा चर्तुमुखी विकास की आकांक्षाओं के साथ ही 9 नवम्बर 2000 को इस राज्य का गठन किया गया। इस राज्य में सभी प्रकार का पर्यटन आकर्षण (चाहे वह तीर्थाटन हो,साहसिक पर्यटन हो, इको पर्यटन हो अथवा आध्यात्मिक पर्यटन) विद्यमान है। पर्यटन एवं विकास की सम्भावनाओं को देखते हुए सरकार ने भी पर्यटन को बढ़ावा देने हेतु महत्वपूर्ण कदम उठाये हैं। इस हेतु पर्यटन नीति–2001 घोषित की गयी जिसमें उत्तराखण्ड को पर्यटन प्रदेश के रूप में विकसित करने, पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए यहॉ की सांस्कृतिक विविधताओं एवं सम्भावनाओं को उजागर करने, इको टूरिज्म को प्रोत्साहित करने, पर्यटकों को उनकी अभिरूचि के अनुसार सुविधायें प्रदान

*एसोसिएट प्रोफेसर–संस्कृत विभाग, लक्ष्मण सिंह महर रा0स्ना0, महाविद्यालय पिथौरागढ–262502 (उत्तराखण्ड)
**शोध छात्रा–संस्कृत विभाग, लक्ष्मण सिंह महर रा0स्ना0, महाविद्यालय पिथौरागढ–262502 (उत्तराखण्ड)

करने, प्रबन्धन में सुधार करने सम्बन्धी महत्वपूर्ण उद्देश्यों को निर्धारित किया गया। इसी प्रकार युवाओं में पर्वतारोहरण के प्रति रूझान बढ़ाने, हिमालयी वनस्पति एवं जीव–जन्तुओं की जानकारी देने के उद्देश्य से सन 1965 ई0 में उत्तरकाशी जिले में 'नेहरू पर्वतारोहण संस्थान' की स्थापना की गयी।

उपर्युक्त वर्णित प्राकृतिक समृद्वता एवं सरकारी प्रयासों से दृष्टिगोचर होता है कि उत्तराखण्ड में पर्यटन को बढ़ाकर राज्य के विकास को एक नवीन गति प्रदान की जा सकती है। यहाँ पर पर्वतारोहण को प्रोत्साहित किया जा सकता है। उत्तरकाशी एवं नैनीताल स्थित पर्वतारोहण संस्थानों के अतिरिक्त उत्तराखण्ड में केदारडोम, गंगोत्री शिखर, चतुरंगी, भागीरथी, शिवलिंग, कालानाग, स्वर्गारोहिणी, कालिन्दीखाल, चौखम्भा, कामेट, त्रिशूल, थरकोट, पंचाचूली आदि शिखर पर्वतारोहण की दृष्टि से मुख्य है। इसी प्रकार इस राज्य में गंगा, यमुना, अलकनन्दा, धौलीगंगा, कालीगंगा, शारदा, कोसी, पिण्डर, भिलंगना, भागीरथी, मन्दाकिनी तथा नन्दाकिनी इत्यादि प्रमुख नदियाँ है, जिनमें रिवर राफ्टिंग, पावर प्रोजेक्ट, विद्युत उत्पादन को विकसित किया जा सकता है। इनके विकास के परिणाम स्वरूप राज्य में पर्यटन के साथ–साथ विद्युत आपूर्ति सम्भव होगी।सन 1906–07 में जब देश के प्रमुख नगर दिल्ली, मुम्बई, कोलकत्ता एवं चैन्नई भी मसालों तथा लालटीनों के माध्यम से रात्रिकाल में प्रकाश की व्यवस्था करते थे तब उत्तराखण्ड के मसूरी में **प्रथम पावर हाउस ग्लोगी'** में बिजली का प्रकाश जगमगाने लगा था। यदि तत्कालीन विज्ञान, तकनीकी एवं पूँजी के प्रायः अभाव में इस प्रकार के निर्माण इस राज्य में विद्यमान है तो वर्तमान में यहॉ जलसम्बधी परियोजनाओं एवं कार्यक्रमों को अधिक उन्नत एवं लाभकारी बनाया जा सकता है, क्योंकि आधुनिक युग पूर्णरूपेण विज्ञान एवं तकनीकी पर ही अवलम्बित है। इस राज्य में टिहरी बॉध परियोजना, मनेरी भाली जल विद्युत परियोजना,पंचेश्वर बाँध परियोजनायें निर्मित है,जोकि विद्युत उत्पादन में विषेश भूमिका का निर्वहन कर रहे है। इसके अतिरिक्त वर्तमान में मेघावाट की श्रीनगर जल विद्युत परियोजना निर्माणाधीन है तथा अन्य परियोजनाओं के निर्माण एवं विकास की राज्य में अत्यधिक सम्भावनायें है। उत्तराखण्ड की नदियाँ धार्मिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। इनकी धार्मिक आस्था के कारण भी प्रतिवर्ष हजारों पर्यटक इस राज्य में आगमन करते है।

पर्वतारोहण, रिवर राफ्टिंग, ट्रैकिंग, एडवेंचर आदि क्रिया–कलापों का उत्तराखण्ड राज्य के विकास में महत्वपूर्ण योगदान हो सकता है, क्योंकि ये क्रियायें वर्तमान युवाओं की रूचि एवं आवष्यकता है। इस प्रकार के पर्यटनों हेतु प्रशिक्षण की भी आवश्यकता होती है, जो कि मानव द्वारा ही संभव है। अतःउत्तराखण्ड राज्य में इस प्रकार के नवीन निर्माणों से पर्यटन प्रोत्साहन के साथ–साथ स्थानीय युवा पीढ़ी को रोजगार की प्राप्ति होगी जिससे राज्य की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी तथा विकास संभव होगा। इसके अतिरिक्त स्टेडियमों के निर्माण द्वारा भी राज्य के विकास को प्रोत्साहित किया जा सकता है। वर्तमान समय में सम्पूर्ण राष्ट्र की युवा पीढ़ी विभिन्न प्रकार के खेलों में विशेष रूचि लेती है। खेल व्यक्ति के सर्वांगीण विकास के लिए भी आवश्यक होते है। इनके माध्यम से आजकल युवा वर्ग अपनी प्रतिभावों को प्रदर्शित करके स्वयं, राष्ट्र अथवा राज्य के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए यदि राज्य में छोटे–बड़े स्टेडियमों का निर्माण किया जाय तो राज्य स्तरीय खिलाड़ियों को अभ्यास करने, प्रतिभा को निखारने का अवसर प्राप्त होगा तथा भविष्य मे ंराष्ट्रीय–अन्तर्राष्ट्रीय खेल दलों का आगमन भी संभव होगा जो कि स्थानीय खिलाड़ियों एवं राज्य दोनों के लिए हितकर होगा।

किसी राज्य अथवा क्षेत्र के विकास में खनिज संसाधनों का भी अत्यधिक प्रभाव पड़ता है। उत्तराखण्ड राज्य के विभिन्न जनपदों में लोहा, तॉबा, गन्धक, खड़िया, ग्रेफाइट, फॉस्फोराइट, लेड, मैग्नेसाइट, डोलोमाइट, जिंक तथा टंगस्टन इत्यादि धातुयें एवं खनिज पदार्थो के भण्डार है। इन पदार्थो का उचित उपयोग हो सके तथा राज्य को आय की प्राप्ति हो इसके लिए भू–सर्वेक्षण विभाग तथा औद्योगिक नीति का विकास होना आवश्यक है, क्योंकि खनिज पदार्थों के उचित सर्वेक्षण, अन्वेषण, एवं दोहन के परिणामस्वरूप ही यह राज्य लाभ प्राप्त कर सकता है। उत्तराखण्ड में उपर्युक्त वर्णित महत्वपूर्ण क्रियाओं के क्रियान्वयन के साथ–साथ राष्ट्रीय उद्यानों, वन्यजीव विहारों तथा अभयारण्यों के निमार्ण द्वारा भी पर्यटन एवं विकास को प्रोत्साहित किया जा सकता है। ये उद्यान एवं विहार जैव–विविधता के संरक्षण के साथ–साथ पर्यटकों हेतु आकर्षण के केन्द्र होते है। जैव–विविधता, वनस्पतियाँ, जीव–जन्तु पृथ्वी के ऐसे संसाधन है जिनका आर्थिक ही नहीं वरन् सामाजिक एवं

सांस्कृतिक महत्व भी होता है। वर्तमान में जीव–जन्तु एवं वनस्पतियाँ लगातार विलुप्त हो रही है जो कि भविश्य के लिए घातक है।अतः इन प्रजातियों की विलुप्ति को रोकने एवं संरक्षण हेतु विहार तथा उद्यानों का निर्माण अत्यन्त सराहनीय कार्य है। यद्यपि भारत का प्रथम राष्ट्रीय उद्यान जिम कार्वेट उत्तराखण्ड (नैनीताल)राज्य में ही अवस्थित है।इस राज्य में क्रमशः छः राष्ट्रीय उद्यान–कार्बेट राष्ट्रीय उद्यान, नन्दा देवी राष्ट्रीय उद्यान, फूलों की घाटी राष्ट्रीय उद्यान, राजाजी राष्ट्रीय पार्क, गंगोत्तरी राष्ट्रीय उद्यान, गोविन्द राष्ट्रीय उद्यान तथा छःवन्य–जीव विहार–गोविन्द वन्य जीव विहार, केदारनाथ वन्य जीव विहार,अस्कोट वन्य जीव विहार, सोना नदी वन्य जीव विहार, बिनसर वन्य जीव विहार तथा मसूरी वन्य जीव विहार स्थित है। इनके अन्तर्गत पशु–पक्षियों तथा वनस्पतियों को संरक्षित रखा गया है। सर्वविदित है कि ये परियोजनायें पर्यटन की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। यहाँ भ्रमण हेतु प्रतिवर्ष हजारों की संख्या में देशी–विदेशी पर्यटक आगमन करते हैं। उत्तराखण्ड राज्य की वन्य जीव संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका है। अतः यहाँ के आरक्षित क्षेत्रों को ध्यान में रखते हुए निकट भविष्य में इनकी संख्या वढ़ाकर पर्यटन को भी बढ़ाने का प्रयास करना होगा।

उत्तराखण्ड राज्य में इन पर्यटनों के अतिरिक्त तीर्थाटन का विशेष महत्व है, क्योकि यह राज्य धार्मिक दृष्टि से अत्यन्त समृद्व है। पंचवदरी, पंचप्रयाग, पंचकेदार तथा चार धाम इसी राज्य में अवस्थित है।इसके अतिरिक्त कटारमल सूर्य मन्दिर–अल्मोड़ा, कार्तिकेय स्वामी मन्दिर–रूद्वप्रयाग, चितई का गोलूमन्दिर–अल्मोड़ा, जागेश्वर मन्दिर, थलकेदार–पिथौरागढ़, पाताल भुवनेष्वर–गंगोलीहाट, नन्दादेवी–अल्मोड़ा, बागनाथ–बागेश्वर, बाराही देवी–चम्पावत, लाखामण्डल –देहरादून इत्यादि प्रमुख धार्मिक स्थल उत्तराखण्ड में ही स्थित है। ये मन्दिर विभिन्न देवी–देवताओं,धार्मिक आस्थाओं तथा विशेष मान्यताओं हेतु उत्तराखण्ड में ही नही अपितु सम्पूर्ण राष्ट्र में प्रसिद्ध है। इन पवित्र तीर्थ स्थलों में वर्ष भर पर्यटकों का आवागमन रहता है। अतः पर्यटन को बढ़ावा देने हेतु इन धार्मिक स्थलों को इस प्रकार नियोजित एवं सुव्यवस्थित करना होगा कि वाह्य श्रद्वालु निर्वाध रूप से यहॉ पर आगमन करके आत्मिक एवं मानसिक शान्ति प्राप्त कर सकें।

उत्तराखण्ड के विकास में यहॉ की प्राकृतिक वन सम्पदा का भी विशेष महत्व है। वनस्पति प्राकृतिक वातावरण का प्रमुख सजीव तत्व है। इनके द्वारा ही पर्यावरण सन्तुलन संभव है–इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए मानव एवं प्रकृति का प्राचीन काल से ही घनिष्ठ संबंध रहा है। वन संपदा द्वारा वायु प्रदूषण पर नियन्त्रण, भूक्षरण पर नियन्त्रण के साथ–साथ भूमि को शस्य श्यामल बनाती है तथा इनसे मानव को ईधन, चारा काष्ठ एवं बहुमूल्य जीवनदायिनी औषधियों की प्राप्ति होती है। उत्तराखण्ड राज्य में वन सम्पदा का अतुल भण्डार है। यहाँ की वन सांख्यिकी 2010–11 के अनुसार विभिन्न वर्गो के अन्तर्गत 34651 वर्ग किमी0 क्षेत्र में वन–सम्पदा का विस्तार है। अतःइस राज्य को वन सम्पदा द्वारा मनुष्यों को भोजन, पशुओं हेतु चारा, कच्चे माल की उपलब्धि, जड़ी–बूटियों की प्राप्ति होती है जिनका उचित प्रयोग राज्य की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने में सहायक सिद्व हो सकता है। इसके अतिरिक्त वन प्रकृति की सौन्दर्यता को संबद्धित करते है। इन सौन्दर्य स्थलों का आनन्द उठाने हेतु प्रतिवर्ष पर्यटक आते है। इसी प्रकार पर्यटन एवं विकास को अग्रसर करने में यहॉ की जलवायु भी महत्वपूर्ण है। ग्रीष्मकाल में जब सम्पूर्ण राष्ट्रगर्मी एवं जलसंकट से तड़फता है तो यहॉ का मौसम अत्यन्त सुहावना होता है।प्रतिक्षण मन्द एवं शीतल वायु प्रवाहित होती है जिस कारण अधिकांशतः ग्रीष्मकाल में ही पर्यटक प्रायः अधिक संख्या में उत्तराखण्ड राज्य में दृष्टिगोचर होते है। इस काल में नैनीताल, मसूरी, रानीखेत, लोहाघाट कौसानी इत्यादि स्थान पर्यटन हेतु विशेष रूप से प्रसिद्व है।

अतः उपर्युक्त वर्णित विवेचन के आधार पर स्पष्टतः कहा जा सकता है कि उत्तराखण्ड की प्राकृतिक सम्पदा का राज्य में पर्यटन को प्रोत्साहित करने एवं विकास की गति को तीव्रता प्रदान करने में महत्वपूर्ण योगदान है। इस राज्य में पर्यटन की दृष्टि से ऋषिकेश, औली, कण्वाश्रम, कैम्पटी फॉल, कौसानी, मसूरी, लैन्सडौन, चकराता,नैनीताल, भीमताल, रानीखेत, ग्वालदम, चॉदपुरगढ़, जोशीमठ, नारायणआश्रम, नीलकण्ठ, पिथौरागढ़, विनसर, मॉणा, मुनस्यारी, लोहाघाट, नानकमत्ता, रीठासाहब तथा हेमकुण्ड इत्यादि स्थल प्रमुख है जो कि अपनी धार्मिकता प्राकृतिक सौन्दर्यता विशेष आस्था, खेल–क्रिया ऐतिहासिक वैभव तथा जड़ी–बूटियों हेतु प्रसिद्व है तथा पर्यटन के मुख्य केन्द्र भी है। अतः उत्तराखण्ड राज्य में पर्यटन एवं विकास हेतु सरकार के साथ–साथ जन सामान्य को भी महत्वपूर्ण कदम उठाने होगे। राज्य में बढ़ रहे

वैश्वीकरण एवं प्रदूषण को समाप्त करने हेतु पर्यटन सार्थक उपाय हो सकता है क्योंकि इसमें मशीनी उद्योगों का कम प्रयोग होगा। रोजगार, यातायात, आवास, वाह्य पूँजीपतियों द्वारा जमीन खरीद पर रोक, सांस्कृतिक मेले इस विकास के घटक होंगे। इसी प्रकार कुछ परम्परागत मृतप्राय परम्पराओं को जीवित करना पर्यटन एवं पर्यावरण हेतु अनुकूल होगा। जैसे–नौले, धारे, बुग्याल, फूलों की घाटियॉ यहॉ के पर्यटन के प्रमुख आकर्षण है, इनका संरक्षण भी आवश्यक है।

उत्तराखण्ड राज्य गठन के पश्चात् शहरीकरण, औद्योगीकरण, तकनीकी विकास एवं निजी स्वार्थो की पूर्ति हेतु मानव ने प्रकृति के साथ मधुर संबंधों को समाप्त करके प्राकृतिक संसाधनों का अनुचित दोहन प्रारम्भ किया जिसके परिणामस्वरूप पर्यावरण विनाश के साथ–साथ प्राकृतिक आपदाओं ने राज्य की दशा एवं दिशा दोनों को ही परिवर्तित कर दिया है। यद्यपि इस राज्य में प्रत्येक वर्ष आपदा एवं नुकसान होता रहा किन्तु 16–17 जून 2013 में केदारनाथ और अन्य स्थानों पर घटित प्राकृतिक आपदायें एवं विनाश आज भी प्रत्येक मानव मस्तिष्क को झकझोर देता है**। अतः प्रकृति के साथ छेड़छाड़ विनाश एवं मृत्यु को आमन्त्रित करती है**–इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए पर्यटन एवं विकास संबंधी क्रियाओं को कियान्वित करना होगा। प्रकृति अपना रौद्र रूप धारण न करे इस हेतु गंगा एवं अन्य नदियों को अविरल धारा में बहने देना होगा। भूस्खलन ना हो, वनस्पतियॉ, वन्य जीव जन्तु, औषधियाँ एवं कच्चा माल प्राप्त होता रहा इसके लिए जंगलों को बचाना होगा । वृहद सिंचाई योजना–परियोजना के स्थान पर लघु परियोजनाओं का विकास करना होगा। यहाँ की भू–भागी संरचना को ध्यान में रखते हुए उद्योगों का निर्माण करना होगा। तीर्थाटनों को प्रोत्साहित कर पर्यटन से अच्छी आय प्राप्त हो इस हेतु स्वच्छता का ध्यान रखते हुए यातायात एवं यात्रियों के ठहरने के उचित प्रबन्ध हो। यात्रियों की भारी संख्या पर नियंत्रण हो तभी हम प्रकृति, पर्यटन, विज्ञान एवं विकास के मध्य संतुलन बनाने में सक्षम होंगे।

सन्दर्भ–

1– कुमाऊँ का इतिहास–बद्रीदत्त पाण्डेय, श्याम प्रकाशन अल्मोड़ा–2011

2– धरोहर–जनपद पिथौरागढ़–राजेश मोहन उप्रेती, प्रथम संस्करण–दिसम्बर 2011

3– उत्तराखण्ड के देवालय–त्रिलोक चन्द्र भट्ट, तक्षशिला प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण–2011

4– उत्तराखण्ड वन सांख्यिकी–2010–11

5– बिनसर उत्तराखण्ड इयर बुक–2014

6– वन सांख्यिकी–2010–11